बोये दे विन्सनेस
नवम्बर १२, २००६

सन्देश संख्या १०६

समझदारी को उपलब्ध समस्त पुरुष और स्त्रियों से एक निवेदन

धार्मिक एवं आध्यात्मिक सजगता के गहनतम आयाम में विशिष्ट बनने की कोई माँग नहीं होती । उस गहराई की यात्रा में ''मैं'' अर्थात् अहंकार का बिल्कुल अस्तित्व नहीं होता । यह ''मैं'' ही है जो विशेष परिधानों, टोपियों, चिह्नों, जटाओं, उपाधियों, नाम परिवर्तन या धार्मिक संगठनों में धर्माधिकारी के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त करना चाहता है ।

धर्म जीवन में सर्वाधिक पवित्र चीज है परन्तु यदि तुम (अर्थात् मन) ने भ्रांति ''मैं'' को निरन्तरता एवं दृढ़ता प्रदान करने हेतु समाज की विश्वास पद्धतियों और उसके भयंकर धर्मों या उसके सम्प्रदायों या उसके पंथों या तथाकथित ''आध्यात्मिकता'' या उसके ''पारलौकिक गृहों'' या उसके ''चमत्कारों'' या उसके ''सूक्ष्म शरीरी यात्राओं'' या उसके ''कुण्डलिनी अनुभवों'' आदि की निरर्थक बातों द्वारा अपने जीवन को नरक बना दिया है तब कृपा कर भगवान के लिए इसे बदलो । इसे आज ही बदलो, कल नहीं । तथ्यों एवं यथार्थता की सजगता को उपलब्ध हो, न कि विखण्डनों एवं मूर्च्छा की अज्ञानता में सोये रहो । ''मैं'' अर्थात् अहंकार सदैव मूर्च्छा में होता है । जीवन को इसे देखने दो और जाग जाओ । यदि तुम दुविधाग्रस्त हो तो क्यों हो, उसके कारणों के प्रति सजग हो और दुविधा मुक्त हो जाओ । यदि तुम्हारी सोच सरल नहीं है तब सरल और सजग हो जाओ । जब तक यह सब घटित नहीं होता, तुम (जीवन) धर्म और सृष्टि के गहनतम आयाम में प्रवेश नहीं कर सकते ।

उपर्युक्त सजगता की स्थिति में जब अनायास ऊर्जा का संचय होता है और वह भी निष्प्रयोजन होता है तभी धार्मिक सजगता की उस गहराई को उपलब्ध हुआ जा सकता है जो कि विभेदकारी चित्तवृत्ति के प्रयास से नहीं होता । उस धार्मिक सजगता की ऊर्जा को उपलब्ध होना ही ध्यान है और वह वहीं संभव है जहाँ हिंसा नहीं होती, प्रेम होता है । तथाकथित धार्मिक पुस्तकों एवं ग्रंथों में उपलब्ध जानकारियों से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं होता ।

।। समझदारी को उपलब्ध पुरुषों और स्त्रियों की जय हो ।।